Research Reinforcement
ISSN 2348-3857

UGC App. No. 64785
Impact Factor : 4.213
ISSN 2348-3857

Research Reinforcement

(A Peer Reviewed International Refereed Journal)

रिसर्च रिइन्फोर्समेंट

Volume 6 Issue 1 May 2018 - October 2018

ISSN 2348-3657

Research Reinforcement

(A PEER REVIEWED INTERNATIONAL REFEREED JOURNAL)

Contents

S.No.	Particulars	Page No.
1.	उच्च शिक्षा, नव उदारवाद : सैद्धांतिक दृष्टिकोण डॉ. राजेश कुमार जांगिड़ एवं डॉ. अशोक	1
2.	राजस्थान के प्रजामण्डल आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका डॉ. संजीव कुमार	8
3.	इक्कीसवीं सदी : एशियाई देशों की सदी (ब्रिक्स तथा संयुक्त राष्ट्र संघ के विशेष सन्दर्भ में) सुरेश चन्द्र काण्डपाल	13
4.	जलवायु परिवर्तन एवं सतत् पोषणीय विकास प्रेम सोनवाल	17
5.	भारत-पाकिस्तान संबंधों में शक्ति असंतुलन और शस्त्र दौड़ की समस्या : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन रामदास बघेला	22
6.	भारतीय ग्राम : गांधी व अम्बेडकर विमर्श डॉ. मोहम्मद कामरान खान	28
7.	बौद्ध धर्म में धर्मनिरपेक्षता महेश कुमार दायमा	34
8.	राष्ट्रीय संदर्भ में नवीन राज्यों की माँग पूनम अग्रवाल	39
9.	भारतीय राजनीति में नैतिक मूल्यों का पतन : एक विश्लेषण डॉ. सुनील महावर	44
10.	भारतीय लोकतंत्र में राजनीतिक दल तथा धर्म : एक अध्ययन सुमन शर्मा	48
11.	मानवाधिकार एवं शोध : राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के सन्दर्भ में अध्ययन डॉ. अनिल कुमार पारीक	52
12.	भारत में दलित महिलाओं की मानवाधिकार प्रस्थिति : वर्तमान परिप्रेक्ष्य चंचल रानी	58

S.No.	Particulars	Page No.
13.	अफगान समस्या : भारतीय विदेश नीति के परिप्रेक्ष्य में डॉ. मधु बाला	64
14.	अन्तरराष्ट्रीय आतंकवाद : लोकतांत्रिक मूल्यों एवं मानव सभ्यता के लिए बड़ी चुनौती डॉ. धर्मराज शर्मा	69
15.	ऋग्वैदिक राजतन्त्र - उसकी प्रकृति एवं सीमाएँ डॉ. कैलाश चन्द शर्मा	74
16.	इसरो का ऐतिहासिक सफर, उपलब्धियाँ और बदलते परिदृश्य के साथ चुनौतियां अनिता महला	79
17.	राजस्थान की सशक्त महिला : एक विकासात्मक अध्ययन (शिक्षा के विशेष सन्दर्भ में) डॉ. अंजु सुथार	85
18.	आज का समय और गाँधीवादी कविता डॉ. विजय कुमार प्रधान	90
19.	सामाजिक मीडिया : नैतिक मूल्यों का अवमूल्यन जय प्रकाश सिंह एवं डॉ. विष्णु कुमार	94
20.	उत्तर आधुनिकतावादी कहानी का वैचारिक स्वरूप सीमा सैनी	98
21.	भारतीय राजव्यवस्था में संसदीय समितियों की प्रासंगिकता : एक विश्लेषण डॉ. प्रेम सिंह	102
22.	वर्तमान भारत-चीन सम्बन्ध (डोकलाम के परिप्रेक्ष्य में) ताहिर अहमद	107
23.	मानवाधिकार एवं स्त्री विमर्श डॉ. हरिचरण मीना	111
24.	डॉ. भीमराव अम्बेडकर के चिन्तन में सामाजिक न्याय की अवधारणा : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन शिप्रा सिंह	115
25.	लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल का भारत के निर्माण में योगदान डॉ. हनुमान प्रसाद मीना	120
26.	अंधविश्वास और चमत्कारों का समाज डॉ. अर्चना गोदारा	124
27.	सुशासन एवं सूचना का अधिकार मुकेश कुमार शर्मा	129
28.	स्त्री अस्मिता और नासिरा शर्मा डॉ वंदना बरमेचा	135

Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
UGC App. No. 64785 | Impact Factor (IIJIF): 4.213 | Vol. 6, Issue 1 | May 2018 - Oct. 2018 | pp. 94-97

सामाजिक मीडिया : नैतिक मूल्यों का अवमूल्यन

जय प्रकाश सिंह

शोधार्थी, शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं (राजस्थान)

डॉ. विष्णु कुमार

शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं (राजस्थान)

शोध सारांश

पिछले कुछ वर्षों में विज्ञान के विकास से सूचना प्रसारण के क्षेत्र में जो क्रांति आयी है उससे भारतीय परिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, शैक्षिक क्षेत्रों में सोशल मीड़िया ने काफी दुष्प्रभावित किया है। समाज के सभी वर्ग (अभिभावक वर्ग, शिक्षक वर्ग, नेता वर्ग, अधिकारी वर्ग) चिन्तित हैं कि भारत में सोशल मीड़िया के क्षेत्र में फेसबुक, व्हाट्सऐप, ट्विटर, यू-ट्यूब एवं गूगल प्रमुख रूप से प्रभावित कर रहे हैं। इसके माध्यम से रहन-सहन, भाषा, विचार, सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्य भी प्रभावित हो रहे हैं। आज किशोरावस्था एवं युवावर्ग के लोग इस तरह आदी हो गये हैं कि इसके बिना एक दिन नहीं रह सकते। या यूं कहूं तो इसके बिना शायद जीवन की कल्पना करना नहीं चाहते, अत: ''अति सर्वत्र वर्जयते'' कहावत ठीक ही बैठती है। आज इसी विषय पर मेरी कोशिश रहेगी कि समाज के बुद्धिजीवी वर्ग, शिक्षा वर्ग एवं अभिभावक वर्ग को इस ज्वलन्त समस्या सामाजिक मीडिया द्वारा प्रभावित होने वाले क्षेत्र, सामाजिक मीडिया द्वारा नैतिक मूल्यों पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के उपाय पर प्रकाश डाल सकूं ताकि आगे इस पर शोध एवं सम्वर्धन कर उज्वल भविष्य की ओर ले जाया जा सके।

संकेताक्षर : *सोशल मीडिया, सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्य, अवमूल्यन, भूमिका*

आज किशोरों एवं युवाओं में सोशल मीडिया के आकर्षण, चकाचौंध के कारण समाज का प्रत्येक व्यक्ति प्रभावित हुआ है। कहते हैं कि हर सिक्के के दो पहलू होते हैं- अच्छा और बुरा। इसका प्रभाव भी सामने आया है। एक तरफ अच्छाई के रूप में देखें तो कम समय में अधिक लोगों से सम्पर्क, पूरी दुनिया एक समाज का हो जाना, अभिव्यक्ति की आजादी, कम खर्च में प्रचार-प्रसार, प्रियजनों से सीधा सम्पर्क, मनोरंजन, ज्ञान का नया भण्डार, पैसे कमाने का जरिया आदि-आदि के रूप में। वहीं इसके अनेक दोष भी सामने दिख रहे हैं। आज इसी विषय पर मेरी कोशिश रहेगी कि समाज के बुद्धिजीवी वर्ग, शिक्षा वर्ग एवं अभिभावक वर्ग को इस ज्वलन्त समस्या पर प्रकाश डाल सकूं ताकि आगे इस पर शोध एवं सम्वर्धन कर उज्वल भविष्य की ओर ले जाया जा सके। पिछले कुछ वर्षों में विज्ञान के विकास से सूचना प्रसारण के क्षेत्र में जो क्रांति आयी है उससे भारतीय परिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, शैक्षिक क्षेत्रों में सोशल मीडिया ने काफी दुष्प्रभावित किया है। समाज के सभी वर्ग (अभिभावक वर्ग, शिक्षक वर्ग, नेता वर्ग, अधिकारी वर्ग) चिन्तित हैं कि भारत में सोशल मीडिया के क्षेत्र में फेसबुक, व्हाट्सऐप, ट्विटर, यू-ट्यूब एवं गूगल प्रमुख रूप से प्रभावित कर रहे हैं। इसके माध्यम से रहन-सहन, भाषा, विचार, सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्य भी प्रभावित हो रहे हैं। आज किशोरावस्था एवं युवावर्ग के लोग इस तरह आदी हो गये हैं कि इसके बिना एक दिन नहीं रह सकते। या यूं कहूं तो इसके बिना शायद जीवन की कल्पना करना नहीं चाहते, किन्तु ''अति सर्वत्र वर्जयते'' कहावत ठीक ही बैठती है। उदाहरण स्वरूप चाय में अधिक मीठा डालने से चाय का स्वाद, चाय कम शरबत हो जाता है। ठीक उसी प्रकार संचार व्यवस्था के विकास से इन सोशल मीडिया के अत्यधिक तेजी एवं अंधाधुंध उपयोग से बुरा प्रभाव पड़ा है।

सामाजिक मीडिया द्वारा प्रभावित होने वाले क्षेत्र

परिवारिक क्षेत्र

आज परिवार के सभी सदस्य इस तकनीकी युग में काफी व्यस्त रहते हैं। जिससे अब वे पारिवारिक सदस्यों के बीच जो भावात्मक एवं संवेगात्मक रूप से जुड़ने का समय नहीं मिलता है। अब तो

तकनीकी संचार का इतना उपयोग हो रहा है कि एक घर में रह रहे बच्चे और माता-पिता भी अपने बच्चे से व्हाट्सऐप द्वारा मैसेज भेजकर बातें करते हैं। परिवार के सदस्य यदि एक साथ मिल भी जाते हैं तो आपस में कोई दूसरी चीजें शेयर तो कर लेते हैं पर अपना मोबाइल एक-दूसरे सदस्यों से शेयर नहीं करना चाहते। क्या कभी आपने सोचा है ऐसा क्यों? इससे अकेलापन, अन्तर्मुखी एवं स्वार्थी प्रवृत्ति उत्पन्न होने लगती है जबकि तीन दशक पहले यदि मोहल्ले में किसी एक व्यक्ति के पास फोन होता था तो भी मोहल्ले के सभी व्यक्तियों का संदेश उस व्यक्ति द्वारा सम्बन्धित व्यक्ति को प्राप्त हो जाता था। अर्थात् मोहल्ले के सभी सदस्य आपस में भावात्मक एवं संवेगात्मक रूप से जुड़ जाते थे और आपसी समरसता का विकास होता था। आज परिवार में सदस्यों के बीच आपसी समरसता उत्पन्न नहीं हो रही है। इससे बच्चों के प्रति सुरक्षात्मक भाव एवं नैतिक अवमूल्यन से अभिभावक परेशान हैं।

भाषा विज्ञान के क्षेत्र

आज सोशल मीडिया के व्हाट्सऐप के मैसेज को ही देख लीजिए। इसके सैकड़ों उदाहरण आपके सामने हैं। जैसे-हिन्दी में नमस्ते की जगह हाथ जोड़े चित्र लगा देते हैं। प्लीज की जगह Plz लिख देते हैं, All is well लिखना हो तो A is और घंटी का चित्र, अंग्रेजी में You are welcome की जगह U R घंटी का चित्र Kom लगा देते हैं। इसका अन्य दुष्प्रभाव यह हो रहा है कि किशोर एवं युवाओं में भाषा शैली, पत्र-लेखन कला, अपनी बात भावों को रचनात्मक रूप से प्रस्तुत करने कला बिल्कुल विलुप्त होने की दिशा में जा रही है। हिन्दी की वर्तनी हो या अंग्रेजी का वाक्य दोनों ही दुष्प्रभावित हुए हैं। क्या कभी आपने सोचा है कि यह कौन-सी भाषा है? यह एक नई भाषा एवं संस्कृति को जन्म दिया है जिसमें कोड़ शब्द + संकेत या तस्वीर लगाकर अपनी बात को मैसेज में भेजते हैं जो कि आने वाली पीढ़ी के लिए घातक सिद्ध होगी। किशोर में न पूर्णत: हिन्दी और न ही पूर्णत: अंग्रेजी भाषा पर अधिकार हो पायेगा, साथ ही साथ कभी-कभी इस भाषा द्वारा अर्थ का अनर्थ भी सामने देखने को मिलता है। जिससे आपसी मन-मुटाव, रंजिश, चरित्रहीनता तक की बात हो जाती है।

सामाजिक क्षेत्र

कुछ किशोर या युवाओं द्वारा अपने मोहल्ले में किसी पड़ोसी से जिससे थोड़ी भी रंजिश, तनाव या झगड़ा होने पर उसकी बुराई के लिए सोशल मीडिया पर उसकी फोटो डालकर कुछ अपशब्द लिखकर मैसेज भेज देते हैं। कभी-कभी फोटोशॉप के माध्यम से उनके फोटो के साथ अश्लील फोटो जोड़कर प्रस्तुत कर देते हैं जो एक सोशल क्राइम है। इससे समाज में न सिर्फ उसके बल्कि पूरे मोहल्ले, समाज एवं देश के लिए शर्मसार हो जाता है। उस व्यक्ति या युवती इस आधुनिकता के प्रतीक नवीनतम आविष्कार क्रान्ति सोशल मीडिया के दुरूपयोग के शिकार हो जाते हैं इस तरह के फेसबुक पर अधिकांशत: फोटो देखकर एक-दूसरे को दोस्त बनाते हैं। इससे कुछ लोग आपस में एक-दूसरे को पसन्द करने लगते हैं। ये धीरे-धीरे इन्टरनेट चैटिंग के द्वारा प्रेम प्रसंग का रूप ले लेता है। जब कभी विपरीत लिंग, महिला पुरुष का आमना-सामना होता है तो पैर तले जमीन निकल जाती है। वास्तविक रूप और फेसबुक पर की फोटो से काफी अन्तर होता है। उसके सपने टूट जाते हैं। एक-दूसरे को अपशब्द, गाली-गलौज यहां तक हिंसात्मक व्यवहार का भी प्रदर्शन हो जाता है।

राजनीतिक क्षेत्र

आधुनिक समय में राजनीतिक क्षेत्र में दुष्प्रभाव काफी अधिक है। आजकल देश के सभी राजनेता लोगों को ही देख लीजिए, चाहे कोई 'सत्ता पक्ष' हो या 'विपक्ष' के नेता किसी प्रकरण में एक राजनीतिक विचारधारा पर किसी नेता के द्वारा किसी कार्य का समर्थन करते हुए ट्वीटर पर कोई मैसेज ट्विट कर देते हैं तो बस क्या है। आगे समर्थकों और विरोधियों के कार्यक्षेत्र अब कुरूक्षेत्र की रणभूमि की तरह ट्वीटर पर संदेशों का तांता लग जाता है इसमें जो भाषा का प्रयोग अभद्रता, लांछन, तीखा प्रहार होता है। यहाँ तक कि आजतक इसके माध्यम से किसी भी व्यक्ति को टारगेट किया जा सकता है।

धार्मिक क्षेत्र

धार्मिक क्षेत्र में और भी बुरा हाल है। आप किसी भी धर्म के आराध्य देवी-देवता की फोटो लगाकर उनके अच्छे विचारों की दो-तीन पंक्तियां लिखकर उसे लाइक कर सोशल मीडिया के किसी भी प्लेटफार्म पर (फेसबुक, व्हाट्सऐप, यू-ट्यूब, ट्वीटर) डाल देते हैं साथ में आप ये लिखना न भूलें कि आपकी हर ईच्छा पूरी होगी यदि आप इसे 11 या 21 लोगों को मैसेज भेज देंगे। आधुनिकता के इस युग में जहां बुद्धिजीवी लोग अमेरिका, जापान, चीन आदि विकसित देशों में '7 जी' नेटवर्क लांच हो रहा हैं वहां भारत में किशोर एवं युवाओं द्वारा 4 जी नेटवर्क में केवल मैसेज डालकर अपनी गरीबी, भुखमरी एवं भ्रष्टाचार दूर करने के लिए मैसेज-मैसेज खेल रहे हैं। क्या कभी आपने सोचा है? यह कैसी विडम्बना है जो भारत में फलफूल रही है। टी.वी. पर धार्मिक गुरु को देख लेवें, किसी व्यक्ति की समस्या का निदान वे समोसे या रसगुल्ला खिलाकर दे रहे हैं आदि। इतना ही नहीं एक धर्म के

धर्मगुरुओं द्वारा दूसरे धर्म के प्रति हीन भावना व्यक्त किये जाने से अन्य धर्म के लोग ठेस पहुंचते ही एक-दूसरे के प्रति हीनता, द्वन्द्व, द्वेष, कभी-कभी तो दंगे का रूप भी ले लेते हैं।

मनोवैज्ञानिक क्षेत्र

वर्तमान में किशोर एवं युवाओं सोशल मीडिया से इतने जुड़े हैं कि अब इनको नशा या लत के रूप ले लिया है। इसमें अपना घंटों समय व्यतीत करने लगे हैं जिसके कारण अपने परिवार के सदस्यों के साथ जितना समय दिया जाना चाहिए या यूं कहें कि ध्यान देना चाहिए नहीं दे पाते हैं। इससे संवेगात्मक, सामाजिक, भावात्मक रूप से आपसी जुड़ाव या लगाव दिनों-दिन कम होते जा रहा है। इस प्रकार जहां मनोवैज्ञानिक रूप से आपसी प्रेम, भाई-चारा, सहिष्णुता बढ़ने की बजाय नैतिक मूल्यों में गिरावट दिखाई दे रही है।

शारीरिक विकास क्षेत्र

वर्तमान समय में देखने में आ रहा है कि किशोर एवं युवाओं में 'आउटडोर एक्टिविटी' बन्द सी होती दिखायी दे रही है। एक ही जगह पर बैठे, लेटकर एवं कुछ जंक फूड खाते रहने से उनमें तरह-तरह की बीमारियां उत्पन्न हो रही हैं। जैसे-मोटापा, उच्च रक्तचाप आदि। इससे व्यक्ति के शारीरिक विकास एवं व्यवहार में परिवर्तन दिखता है। उनमें चिड़चिड़ापन, आक्रोश, धैर्य की कमी आदि। इस तरह के नैतिक मूल्यों का ह्रास होते हुए दिख रहा है।

शिक्षा क्षेत्र

जो किशोर एवं युवा शिक्षा क्षेत्र के इस सोशल मीडिया से जुड़े हैं वे सभी किसी विषयवस्तु शीर्षक पर नवीनतम ज्ञान समय से पूर्व प्राप्त कर लेते हैं। यहां तक कि उन्हें जो उनकी उम्र के पड़ाव पर नहीं जानना था वह भी जान लेते हैं। अर्थात् समय से पूर्व ही सबकुछ जान लेते हैं इससे वे अपनी कक्षा में शिक्षक द्वारा पाठ्यक्रम की पढ़ाई में उदासीन होते हैं क्योंकि वे पहले से ही वे बातें जान चुके होते हैं। कक्षा में बातचीत करना, अनुशासनहीनता, गंदी हरकतों का व्यवहार करना प्राय: देखने में आता है। ये आज शिक्षक के सामने चुनौती के रूप में हो रही है। कभी-कभी तो छात्र कक्षा में पीछे मोबाइल लेकर सोशल मीडिया से जुड़े रहते हैं। शिक्षक द्वारा पूछे जाने पर वे झूठ बोल देते हैं कि आपका व्याख्यान रिकॉर्ड कर रहा हूं। इस तरह के नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है।

खेलकूद का क्षेत्र

आजकल विशेष रूप से किशोरावस्था के छात्र ऐसे सोशल मीडिया पर वीडियो गेम उपलब्ध है जिनके प्रयोग से वे आत्महत्या की घातक घटना तक पहुंच रहे हैं। युवाओं में विभिन्न तरह के खेलों (क्रिकेट, फुटबाल, हॉकी आदि) में भी सट्टेबाजी, जुआ आदि अनैतिकता की प्रवृत्ति को बढ़ावा देखने में आ रहा है।

कार्यक्षेत्र

कार्यक्षेत्र में सोशल मीडिया का उपयोग वर्तमान में कार्यरत व्यक्तियों द्वारा अधिकांशत: किया जा रहा है जिससे उनकी कार्यक्षमता में विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। कार्यक्षमता का भरपूर उपयोग नहीं हो पा रहा है जिससे उत्पादकता एवं गुणवत्ता में ह्रास पाया जा रहा है। जैसे- परीक्षा भवन में शिक्षक वर्ग द्वारा मोबाइल पर सोशल मीडिया से जुड़े रहना, संसद सत्र में नेताओं द्वारा अपने मोबाइल पर अनैतिक वीडियो को देखा जाना आदि।

उपरोक्त विवेचनाओं से स्पष्ट है कि सोशल मीडिया से आज काफी हद तक नैतिक मूल्यों के हनन को बढ़ावा मिल रहा है।

सामाजिक मीडिया द्वारा नैतिक मूल्यों पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के उपाय

दुनिया के बुद्धिजीवी लोग ऐसे तरीके ढूंढने की कोशिश में हैं जो आधुनिकता को खारिज नहीं करते मगर उनकी समस्याओं को दूर करने का प्रयास जरूर करते हैं। किसी भी समाज के राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक विकास के लिए शिक्षा एक आधारभूत एवं सबल साधन है जिसके माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ज्ञान एवं अनुभव को रूपान्तरित किया जाता है। भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी का कहना ठीक ही था कि "शिक्षा का उद्देश्य चरित्र और मानव मूल्यों का विकास करना, तकनीकी के द्वारा सीखने की सामर्थ्य बढ़ाना और बच्चों में भविष्य का सामना करने का आत्मविश्वास का निर्माण करना है।" शिक्षा के क्षेत्र में सबसे दिलचस्प प्रयोग तकनीकी साधनों के विकास एवं उसके उपयोग से पैदा होने वाली समस्याओं की रही है। शिक्षाविदों के मुताबिक रचनात्मक सवाल यह हमेशा से बनी रही है कि ऐसी पाठ्यचर्चा और कक्षाएं कैसी रची जाएं जो बच्चों को काल्पनिक दुनिया एवं प्रतिस्पर्धा मशीन की बजाय परस्पर सहयोग के माध्यम से आगे बढ़ने को प्रोत्साहित करे।

1. घर का पारिवारिक माहौल- कहते हैं कि प्रथम पाठशाला तो बच्चे का घर होता है और प्रथम शिक्षिका माँ। बच्चों में इसी माहौल से सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों की नींव पड़ती है। बच्चे अपने बड़ों के आचरण से ही सीखते हैं। इसलिए जरूरी है कि परिवार के अन्य बड़े सदस्य सोशल मीडिया की लत से दूर रहें।

2. अभिभावक- अभिभावक अपनी अनमोल सम्पत्ति संतान से ज्यादा भौतिक सम्पत्ति का ध्यान रखते हैं। वे जरूरत की चीजों की उपलब्धता कराकर, स्कूल भेजकर अपना कर्त्तव्य पूरा समझते हैं जो ठीक नहीं है। अभिभावक को चाहिए कि बच्चों के लिए समय निकाले, उसकी क्षमता, रुचि, अभिरुचि की पहचान करें, अभिभावक को सबसे ज्यादा जागरूक बनाया जाना चाहिए ताकि वे समझ पायें कि अपने बच्चों के लिए क्या सही है और क्या गलत है? किशोर बच्चों में मल्टीमीडिया फोन से दूर रखें इससे तार्किक सोच एवं परिश्रम की क्षमता पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

3. शिक्षा- शिक्षा के माध्यम से यह समझाया जाये कि आपके लिए मल्टीमीडिया फोन है न कि आप इसके लिए। स्कूल एवं महाविद्यालयों में इससे सम्बन्धित नियम, लाभ-हानि एवं इसके अच्छे उपयोग कैसे हो सके, पाठ्यक्रम में एक पाठ के रूप में जरूर दिये जायें, ताकि बच्चे जागरूक हो सकें। अभिभावकों के लिए अनौपचारिक शिक्षा के रूप में विभिन्न स्थानों पर नाटक, नुक्कड़, डाक्यूमेन्ट्री फिल्म दिखाकर जागरूक किया जा सकता है। शिक्षा द्वारा सभी वर्ग के लोगों में इसके प्रति उचित उपयोग की बौद्धिक योग्यता को बढ़ावा दिया जा सकेगा।

4. राजनीतिक इच्छाशक्ति- ज्यादातर उपभोक्ता दस से बाईस वर्ष के लोग होते हैं। इन नये वोटरों को राजनीतिज्ञ लोग नाराज नहीं करना चाहते। सभी दलों के नेताओं को वोट की राजनीति से ऊपर उठकर कड़े नियमों के निर्माण एवं क्रियान्वयन पर सहमत होकर एक पॉलिसी बनानी होगी। मीडिया स्वतंत्र रहे पर मीडिया में राजनीति का हस्तक्षेप होना हमेशा बुरा नहीं होता है। उन मीडिया को जो भ्रष्टाचार, सम्प्रदाय एवं केवल सत्ता पक्ष के हित में लगे हों, पहचान कर लज्जित किया जाना चाहिए। राजनीतिक चेतना जितनी अधिक होगी और उसका विस्तार जितना अधिक होगा, लोकतंत्र और समाज दोनों के लिए हितकारी होगा।

5. सरकारी प्रावधान- सरकार की तरफ से सोशल मीडिया के कड़े प्रावधानों को प्रशासनिक रूप से पूर्णत: लागू किया जाना चाहिए। उन कानूनी प्रावधानों को जनता के बीच जागरूकता फैलायी जानी चाहिए। यह एक नीति बनाकर 'औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा' के तहत पूरे देश में लागू किया जाना चाहिए। सभी तरह के उपभोक्ताओं की उम्र को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम बनाकर 'प्री-प्राइमरी से हायर एजुकेशन' तक और प्रौढ़ शिक्षा से सर्व शिक्षा अभियान तक में प्रावधान किया जाना चाहिए।

6. अन्य प्रावधान- फर्जी आई.डी. के विरूद्ध कार्यवाही, इसकी पहचान कर कड़ी सजा एवं कानूनी प्रावधान किये जायें। भविष्य में ऐसा न हो इसके लिए कोई पहचान पत्र जैसे आधार कार्ड से जोड़ा जाय।

सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे अनैतिक एवं असामाजिक सूचनाओं की जांच एवं स्वायत्त संस्था द्वारा की जानी चाहिए। ऐसे फैलाये जाने वाले लोगों पर कड़ी सजा का प्रावधान हो।

समाचार पत्रों, टी.वी. एवं अन्य सूचना संचार द्वारा 'वायरल सच एवं झूठ' का खुलासा दिया जाना चाहिए जिससे जनता में इसके प्रति सही-गलत की समझ आ सके।

सोशल क्राइम उर्व साइबर जैसे सामाजिक मीडिया के लिए नई समस्या बनकर आ रही है इसको ध्यान में रखते हुए विशेष कार्यक्रम निर्माण किये जायें जिसमें केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार दोनों ही सहयोगी बनें। कुछ साइटों को प्रतिबंधित किया जाये जिसके द्वारा आतंकवाद, भ्रष्टाचार, अनैतिकता एवं आत्महत्या (ब्लीडियो गेम) जैसी प्रवृत्ति को बढ़ावा मिले।

अंत में सारांश के रूप में यह कहना चाहता हूं कि आधुनिकता के लाभों को संभाले बिना उसको पूरा का पूरा खारिज कर देना स्वयं को पुन: अंधकार युग में ढकेल देने का कृत्य होगा। संभवत: यह बेहतर होगा कि बहुत सारे संवैधानिक सुधार एवं आधुनिक युग पर केन्द्रित किये जायें, इसके लिए हमें ऐसी शिक्षा व्यवस्था की रचना करनी होगी जो हमारी मानवीयता को बढ़ावा दे या ऐसी शिक्षा व्यवस्था जिसमें व्यक्तियों के मध्य आपसी समरसता को बढ़ावा दे सकें। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि तकनीकी विकास के साथ-साथ सामाजिक विकास मूल्यपरक रूप से संतुलन बना रहे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्ता, आशा, बच्चे हमारे आचरण से सीखते हैं उपदेश से नहीं, वैचारिकी, नवम्बर-दिसम्बर 2015, भाग-31, अंक-6, आईएसएसएन नं. 0975-6531, पृ. 73-74
2. रूहेला, एस.पी., विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-2, पृ. 592
3. सहाय, मनोरंजन, भारतीय पारिवारिक सामाजिक-सांस्कृतिक क्षय का कारण सोशल मीडिया, वैचारिकी, सितम्बर-अक्टूबर 2017, भाग-33, अंक-5, आईएसएसएन नं. 0975-6531, पृ. 75-78
4. शर्मा, सुरेश एवं शर्मा, उषा, लोकतंत्र में मूल्य एवं शांति शिक्षा, सिग्निफायर ऑर चेन्ज (बदलाव का संकेत), साहित्य संस्कृति और शोध की पत्रिका, अंक-3, जून-दिसम्बर, 2016, विशेषांक : लोकतंत्र में मूल्य, शांति और शिक्षा, पृ. 161-164